

एस्पलियार प्रणाली से बढ़ाएं फलोत्पादन

आराधना कुमारी*, संतोष कुमार सिंह**, पी. के. मिश्रा* और विनोद कुमार गर्ग*

एस्पलियार प्रणाली पौधों के विकास के लिए उपयोगी तकनीक है। यह पौधों को सही सहारा और संरचना प्रदान करती है। यह पौधों के विकास को बढ़ावा देने में मदद करती है तथा फलों के उत्पादन में वृद्धि करती है। इस तकनीक में, पौधों के चारों ओर धागे लगाकर या ट्रेलिस, फेंस, दीवार या अन्य संरचनाओं से उन्हें सही सहारा दिया जाता है। इस प्रणाली को अक्सर अमरूद, सेब, नाशपाती, शरीफा और संतरे जैसे फलों को उगाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इस तकनीक का उपयोग पौधों के उचित विकास और फलों के अधिक उत्पादन के लिए किया जाता है।



एस्पलियार प्रणाली का प्रयोग अमरूद के उत्पादन में

एस्पलियार प्रणाली एक ऐसी तकनीक है जो पौधों को दो-आयामी ढंग से उभारने के लिए एक टिकाऊ संरचना उपलब्ध करवाती है। इस प्रणाली में पौधे एक मजबूत संरचना के साथ उगाए जाते हैं। यह ट्रेलिस, फेंस, दीवार या अन्य संरचनाओं से मिलती-जुलती है। एस्पलियार प्रणाली का उपयोग पौधों में उचित संरचना और विकास के लिए किया जाता है।

कार्य प्रणाली

यह प्रणाली उन पौधों के लिए उपयोगी होती है, जिन्हें खेती करने के लिए अधिक स्थान की आवश्यकता होती है। इस प्रणाली के उपयोग से, पौधे ऊपर की ओर फैलाए जा सकते हैं। इस प्रकार पौधों की किस्म

के अनुसार उनमें फलों का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है।

इस प्रणाली का उपयोग अलग-अलग

उपयोगी प्रणाली

एस्पलियार प्रणाली का उपयोग करने से पौधों के विकास में कम खर्च आता है और यह किसानों को लाभ पहुंचाता है। इसके अलावा, यह तकनीक कम स्थान वाली जगहों में भी उपयोगी है जहां पौधों के विकास के लिए कम स्थान उपलब्ध होता है। यह एक बहुत ही उपयोगी तकनीक है जो किसानों को फसल के विकास में मदद करती है। इससे फसल के उत्पादन में वृद्धि होती है और किसान अधिक आय कमा सकते हैं। इससे न केवल किसानों को फायदा मिलता है बल्कि यह वन्य जीवन के लिए भी फायदेमंद है।

प्रकार के पौधों में किया जाता है, जैसे कि अमरूद, सेब, नीबू, नाशपाती, संतरा आदि के अलावा खेतों, बागों और अन्य विकसित क्षेत्रों में भी किया जाता है।

एस्पलियार प्रणाली के माध्यम से, पौधों में उचित संरचना और विकास के लिए जरूरी सहारा प्रदान किया जाता है। यह एक प्रकार से खेती का उपकरण होता है और कम जगहों में भी फल उत्पादन को संभव बनाता है। यह तकनीक वृक्षों और विभिन्न पौधों को सहारा और संरचना प्रदान करने में मदद करती है।

इस प्रणाली के माध्यम से फलों को उगाने के लिए अमूमन खेतीबाड़ी में संरचनाएं बनाई जाती हैं। इन संरचनाओं के अलावा, एक अन्य उपयोग इस तकनीक के माध्यम से पौधों के फलों को सही ढंग से उगाना होता है। इसके लिए, प्रत्येक पौधे को सही तरीके से सहारा देने के लिए उन्हें उचित अंतराल पर उठाया जाता है।

*कृषि महाविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्व विद्यालय, गंज-बासोदा, विदिशा, मध्य प्रदेश; **मृदा विज्ञान विभाग, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर, बिहार



एस्पलियार प्रणाली का उपयोग शरीफा के उत्पादन में

उपयोग

- पहले, खेत की तैयारी करें तथा फसल के लिए उपयुक्त मिट्टी को तैयार करें।
- एस्पलियार प्रणाली का उपयोग करने के लिए उचित फसलों का चयन करना बहुत जरूरी है। फसल के आकार और ऊंचाई के अनुसार उचित फसलों का चयन करें।
- अब, फसल के लिए धागों को तैयार करें। एस्पलियार प्रणाली के लिए धागे तैयार करने हेतु प्लास्टिक या मेटल के धागे का उपयोग कर सकते हैं। धागों को सही अंतराल पर खेत में लगाएं ताकि पौधों के बीच सही फासला रहे।
- अब पौधों को धागों से बांधें। धागों को पौधों के चारों ओर से घुमाते हुए बांधें। धागों को सही दबाव और अंतराल पर बांधें ताकि पौधों को सही सहारा मिले।
- धागों के साथ-साथ स्टेक्स उपयोग करें। इनको पौधों के साथ लगाकर धागों के सहारे को बढ़ाएं।
- पौधों के अनुसार सही समय पर धागों को ढीला करें या ढंग से बांधने की जरूरत न होने पर हटा दें। इससे पौधे को अधिक स्वतंत्रता मिलती है। वे अपने अनुसार विकसित होते हैं।

- अंत में, धागों को हटाएं और स्टेक्स को संकलित करें। धागों को हटाने से पहले, सुनिश्चित करें कि पौधे धागों से पूरी तरह से अलग हो गए हैं। स्टेक्स को संकलित करें और बाद में दूसरी फसल के लिए इनका उपयोग किया जा सके।

विभिन्न फलदार वृक्षों में उपयोगी

एस्पलियार प्रणाली के माध्यम से कई प्रकार के फलों को उगाया जा सकता है। इस तकनीक का उपयोग विभिन्न फलों के लिए बहुत ही उपयोगी होता है। यहां हम अलग-अलग फलों के उदाहरण देखेंगे जो एस्पलियार प्रणाली के माध्यम से उगाए जाते हैं:

- **अमरूद:** एस्पलियार प्रणाली का उपयोग अमरूद के लिए किया जाता है। अमरूद एक पौष्टिक फल है और खाने में स्वादिष्ट होता है। यह प्रणाली अमरूद को सही सहारा और संरचना प्रदान करती है और इसके फलों के वृद्धि में मदद करता है।
- **सेब:** सेब, भारत में बहुत लोकप्रिय फल है। एस्पलियार प्रणाली के माध्यम से सेब को सही सहारा देने में मदद की जाती है। इससे सेब के फलों का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है।

- **नीबू:** नीबू के फल अमूमन खेतीबाड़ी में उगाए जाते हैं। एस्पलियार प्रणाली का उपयोग नीबू के फलों को सही संरचना देने में मदद करता है।
- **नाशपाती:** ये मीठे फल होते हैं। और अधिकतर उत्तर भारत में उगाए जाते हैं। एस्पलियार प्रणाली का उपयोग नाशपाती के फलों को सही सहारा देने में किया जाता है और इस प्रणाली द्वारा फल का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है।
- **संतरा:** संतरा, भारत में उगाया जाने वाला फल है। इस प्रणाली के माध्यम से संतरे को सही संरचना देने में मदद की जाती है।

अध्ययन

बहुत सारे किसान उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले में अमरूद के फलों को एस्पलियार प्रणाली के माध्यम से उगाते हैं। यह तकनीक उन्हें सही सहारा प्रदान करती है और उनके फलों का उत्पादन बढ़ाती है। इससे उन्हें अधिक लाभ मिलता है और किसानों की आर्थिक स्थिति मजबूत होती है।

ग्रामीण क्षेत्रों में अमरूद का उत्पादन बहुत अधिक होता है। यहां एस्पलियार प्रणाली का उपयोग किया जाता है। इससे उन्हें अधिक उत्पादकता मिलती है और किसान इससे अधिक लाभ कमा सकते हैं।

यह प्रणाली पौधों के विकास के लिए एक उपयोगी तकनीक है। इसका उपयोग फलों का उत्पादन तो बढ़ता है साथ ही इससे पौधों के विकास में कम खर्च आता है। इससे किसानों को भरपूर लाभ होता है। इसलिए, यदि आप पौधों के उचित विकास तथा अच्छे उत्पादन में रुचि रखते हैं तो एस्पलियार प्रणाली आपके लिए एक उपयोगी तकनीक साबित हो सकती है।

एस्पलियार प्रणाली के लाभ

- **सही संरचना:** यह प्रणाली पौधों को सही संरचना और समर्थन प्रदान करने में मदद करती है। यह समर्थन संरचना पेड़ों और पौधों के विकास में मदद करती है और फलों के उत्पादन को बढ़ाती है।
- **स्थान की बचत:** इस प्रणाली का उपयोग कम स्थान वाली जगहों में भी किया जा सकता है। इससे फलों का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है जिससे स्थान की बचत होती है।
- **कम खर्च:** इसके माध्यम से फलों को उगाने के लिए कम खर्च की आवश्यकता होती है। इससे खर्च कम होने से फलों की बिक्री में ज्यादा लाभ होता है।